अदेशकाले=अयोग्य देशकाल में; **यत्**=जो; **दानम्**=दान; **अपात्रेभ्यः**=अपात्र को; **च**=तथा; **दीयते**=दिया जाता है; **असत्कृतम्**=अपमानपूर्वक; **अवज्ञातम्**=तिरस्कार के साथ; **तत्**=वह; **तामसम्**=तामस; **उदाहृतम्**=कहा जाता है।

अनुवाद

जो दान अयोग्य देशकाल में, अपात्र को या सम्मान के बिना तिरस्कारपूर्वक दिया जाता है, वह तामस है।।२२।।

तात्पर्य

इस प्रकार मद्यपान और द्यूत आदि के लिए दान करने का निषेध है। ऐसा दान तामस कहलाता है। इससे कोई लाभ नहीं· वरन् पापात्मा मनुष्यों का ही प्रोत्साहन होता है। इसी प्रकार, सत्पात्र को सत्कार के बिना तिरस्कारपूर्वक दान देना भी तामस है।

ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च विहिताः पुरा।।२३।।

यज्ञाश्च

ॐ=श्रीभगवान् का नादरूप; **तत्**=वह; **सत्**=शाश्वत; **इति**=ऐसे; **निर्देशः**=नाम; **ब्रह्मणः**=परब्रह्म का; **त्रिविधः**=तीन प्रकार का; **स्मृतः**=कहा गया है; **ब्राह्मणाः**=ब्राह्मण; **तेन**=उससे; **वेदाः**=वेद; **च**=तथा; **यज्ञाः**=यज्ञ; **च**=भी; **विहिताः**=प्रकट हुए; **पुरा**=सृष्टि के आदिकाल में।

अनुवाद

ॐ तत् सत्—ये तीनों अक्षर ब्रह्मतत्त्व के वाचक हैं; इसी नाम से सृष्टि के आदिकाल में ब्राह्मण, वेद और यज्ञ प्रकट हुए थे।।२३।।

तात्पर्य

यह वर्णन किया जा चुका है कि तप, यज्ञ, दान और आहार के सात्त्विक, राजस तथा तामस—ऐसे तीन-तीन भेद हैं। चाहे किसी भी श्रेणी के क्यों न हों, माया-दूषित होने के कारण वे सभी उपाधिग्रस्त हैं। परन्तु **ॐ तत् सत्**, अर्थात् सच्चिदानन्दमय श्रीभगवान् की ओर लक्षित होने पर ये पारमार्थिक उन्नति के साधन बन जाते हैं। शास्त्रों में इस लक्ष्य का उल्लेख है। ये तीनों शब्द— **ॐ तत् सत्**, विशेष रूप से परब्रह्म श्रीकृष्ण के वाचक हैं। वैदिक मन्त्रों में ओंकार तो सदा पाया ही जाता है।

जो शास्त्र-विधि के अनुसार आचरण नहीं करता, उसे परतत्त्व की प्राप्ति नहीं हो सकती। उसे कुछ क्षणिक लाभ तो हो सकता है, परन्तु जीवन के परम लक्ष्य से वह वंचित ही रहेगा। सारांश यह है कि यज्ञ, दान, तप, आदि का सात्त्विक आचरण ही करना चाहिए। इनका राजस अथवा तामस अनुष्ठान निश्चित रूप से निकृष्ट होगा। **ॐ तत् सत्**—इन तीनों शब्दों का उच्चारण श्रीभगवान् के पावन नाम के साथ किया जाता है, जैसे **ॐ तद्विष्णोः**। वैदिक मन्त्रों अथवा भगवन्नाम के उच्चारण के साथ ओम् जुड़ा रहता है; वैदिक शास्त्रों का ऐसा निर्देश है। उपरोक्त तीनों ही शब्द